कृत्य किसी का-
श्रेय किसी को

श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI SANDIPBHAI PATEL,
MOHADEL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कृत्य किसी का -- श्रेय किसी को

जीवात्मा का स्वतंत्र अस्तित्व होता है । वह प्रकट् विकसीत एवं समर्थ भी अपने ही पुरुषार्थ से होती है । इतने पर भी यह निश्चित है कि माता के सहयोग के बिना उसकी अदृश्य सत्ता मूर्तिमान नहीं हो सकती । पक्षियों के अण्डे मादा देती ही नहीं, सेती भी है । मनुष्यों और पशुओ के अंडे उनके पेट में पकते है और उसी की देख-रेख में अपने पैरों खड़े हाने योग्य बनते हैं ।

मनुष्य के आध्यात्मिक और भौतिक जीवन को विकसित करने के लिए किसी समर्थ सहयोगी की आवश्यकता पड़ती है । ऐसा न होने पर प्रगतिपथ अत्यन्त दुसह हो जाता है । एक समर्थ मार्गदर्शक का सच्चा सहयोग उपलब्ध हो जाना आधी मंजिल पूरी हो जाने के बराबर है । कुआँ, घड़ा, बाहुबल होते हुए भी रस्सी के अभाव में प्यास बुझाने का सुयोग बनता ही नहीं ।

अध्यात्म क्षेत्र का सौभाग्य यहीं से आरम्भ होता है । पर उस उपलब्धि के पीछे पात्रता रूपी एक अनिवार्य शर्त जुड़ी हुई है । कोई अपनी सुयोग्य कन्या अपंग भिक्षुक से नहीं ब्याहता वरन् ऐसे वर की तलाश करता है जो बेटी को सुखी सुसमुन्नत बनाने का उत्तरदायित्व वहन कर सके । सिद्ध पुरुषों की इस संसार में कमी नहीं, कमी सुपात्र शिष्यों की है । अन्यथा वे जहाँ भी जाते हैं, खोटे सिक्कों की तरह वापस लौटा दिए जाते हैं ।

हमारी अपनी प्रगति का आधार भी यही है । गायत्री मन्त्र की दीक्षा और यज्ञोपवीत संस्कार तो महामना मालवीय जी ने प्रायः दस वर्ष की आयु में ही कर दिया था । दीक्षा देते समय उनने कहा था—"यह ब्राह्मण की कामधेनु है, इसे श्रद्धा पूर्वक अपनाना ।" पिता श्री ने समझाया कि ब्राह्मण शब्द का अर्थ वंश विशेष से नहीं है, वरन् उनका संकेत गुण, कर्म, स्वभाव की दृष्टि से श्रेष्ठ आदर्श बनाने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से है । अन्तरंग का स्वभाविक गठन उसी स्तर का होने से उन अनुबन्धों का परिपालन और अभ्यास कुछ कठिन नहीं पड़ा।

पन्द्रह वर्ष की आयु में हिमालय वासी ऋषिकल्प महान मार्गदर्शक का अनुग्रह घर की पूजा कोठरी में बैठे हुए हुआ । प्रकाश पुंज के मध्य एक सिद्ध पुरुष की झाँकी हुई । आश्चर्य भी हुआ और डर भी लगा । पर वह स्थिति देर तक न रही। उनने पिछले अनेक जन्मों के, फिर अन्तिम तीन जन्मों के दृश्य फिल्म की तरह दिखाए। तीनों एक से एक महान थे। एक जन्म में जातिगत भेदभावों का, दूसरे में भारत को स्वतन्त्र कराने के निमित्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले व्यक्तित्व ढालने का, तीसरे में देश-देशान्तरों में भारतीय संस्कृति का विस्तार करने हेतु अत्यन्त प्रतिभाशाली जीवन जिये गए थे । देखते ही आत्मबोध हुआ, निश्चय किया कि जो मार्गदर्शक पिछले जन्मों में ऊँगली पकड़ कर चलाता रहा है, उसी के चरणों में यह चौथा जन्म भी समर्पित होगा। मन, वचन और कर्म से किया गया यह समर्पण स्वीकार कर लिया गया।

आगे क्या करना, इसकी पहली मंजिल यह बताई गयी, कि इस बार अपेक्षाकृत बड़ा बोझ उठाना है । बड़ा, पुरुषार्थ करना है, इसलिए तदनुरूप आत्मबल भी संग्रह करना है। उनका तात्पर्य तपश्चर्या से– आत्म परिशोधन से था और साथ ही यह भी था, कि सांसारिक ललक - लिप्साओं को अस्वीकार करने, दबावों और आकर्षणों के सामने न झुकने का साहस संचय किया जाय। लोग क्या करते या कहते हैं, इसकी ओर ध्यान न देकर आत्मा की पुकार पर एकाकी चल सकने की समर्थता अर्जित की जाय।

सिद्धांतों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए साधन बताया गया— गायत्री के २४ महापुरश्चरण; एक वर्ष में एक के हिसाब से २४ वर्ष की साधना। अपने विश्वास की साक्षी रूप में अखण्ड घृत दीप की स्थापना करना । इन वर्षों में मात्र जौ की रोटी और गाय की छाछ पर निर्वाह करना । यह कर गुजरने के लिए संकल्प किया और विश्वास दिलाया। इसमें एक ही प्रमुख बाधा थी– तथाकथित परिवारियों और संबंधियों का प्रबल विरोध और भीतरी दुर्बलताओं का आक्रमण।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस प्रयास में व्यतिरेक एक ही पड़ता रहा, कि स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण बीच - बीच में व्यवधान पड़ना। जो कार्य शेष रह गया था, उसे सन् ४५ के बाद एकनिष्ठ होकर मथुरा में पूरा किया।

गुरुदेव को जाँचना था कि साधक को, श्रद्धा और उसकी महान परिणति पर विश्वास हुआ या नहीं। इसके लिए उनने अनुष्ठान की पूर्णाहुति के लिए मथुरा में सहस्र कुण्डी गायत्री यज्ञ करने का आदेश दिया, साथ ही यह समझाया कि अब तक सभी ने कुछ बोने के उपरान्त ही कुछ महत्वपूर्ण पाया है। गायत्री के द्रष्टा विश्वामित्र ने भी अपना राजपाट छोड़ा और शिष्य हरिश्चद्र से छुड़ाया था। समय आ गया कि तुम्हें भी वही कर गुजरना चाहिए।

बात अंतरंग में बैठ गयी और ईश्वर के विराट् रूप जनता-जनार्दन के खेत में बोना शुरू कर दिया। पैतृक सम्पदा के रूप में लम्बी चौड़ी जमींदारी थी, उसे बेचकर जन्मभूमि में एक हाईस्कूल बनाने के अतिरिक्त गायत्री तपोभूमि के निर्माण में भी वह पैसा काम आया। गायत्री तपोभूमि के ऐसे आश्रम की स्थापना हुई जो युग परिवर्तन के क्षेत्र में महती भूमिका सम्पादित कर सके। इसके अतिरिक्त उसी अवसर पर सत्पात्र विचारशील धर्मप्रेमियों का एक अखिल भारतीय संगठन खड़ा करना– यह कार्य भी उसके साथ जुड़े हुए थे। हमारा मन अचकचाया कि साधन और सहयोग के अभाव में इतना बड़ा कार्य कैसे बन पड़ेगा, पर मार्गदर्शक की एक मुस्कान भरी झाँकी ने सभी संदेहों का निवारण कर दिया, कि जब घोड़े हाँकने वाले इतने समर्थ सारथी का हाथ सिर पर है, तो झूठ-मूठ गाँडीव चलाने और विजय श्री का वरण करने में अपना जाता ही क्या है। समय आया और वे तीनों कार्य इस प्रकार, एक साथ कुछ ही दिनों के प्रयत्न से सम्पन्न हो गये, मानों वे पहले से हि किये हुए रखे हैं। जिन्हें मथुरा के सन् ५८ में सम्पन्न हुए गायत्री महायज्ञ का स्मरण है, वे अभी भी आश्चर्यचकित होकर वर्णन करते हैं, कि प्रायः ५ लाख व्यक्तियों के निवास, भोजन आदि का प्रबंध किस प्रकार एकाकी प्रयत्न से सम्पन्न हो गया। गायत्री तपोभूमि का आश्रम भी बना और गायत्री

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिवार का विशालकाय संगठन भी खड़ा हो गया। इस चमत्कार से हमारा मन आत्मविश्वास से भर गया, कि सौंपे गये किसी भी कार्य को कर गुजरना कठिन न होगा।

मार्गदर्शक का उद्देश्य हमें युगान्तरीय चेतना का आलोक व्यापक बनाने के कार्य में लगा देने का था। इसके लिए युग साहित्य के सृजन के कार्य में जुटना था, सो प्रायः सभी आर्ष ग्रन्थों का अनुवाद और युग समस्याओं के स्वरूप और समाधान समझाने वाले साहित्य लिखने की आज्ञा हुई। इतने व्यापक क्षेत्र में इतना बड़ा काम करने में जब कभी असमंजस उभरा, तभी आत्मविश्वास ने—अनुभव ने साक्षी दी कि इतने बड़े सहायक के रहते कोई कार्य कठिन नहीं होना चाहिए। अपने शरीर के वजन जितना साहित्य कुछ ही दिनों में विनिर्मित हो गया। हाथ इस तेजी से चले मानों उनमें बिजली की मोटर लगी हो और संगृहीत ज्ञान का भण्डार उगला भर जा रहा हो। यह होते देखकर वह पुरातन गाथा स्मरण आती रही, जिसमें व्यास जी पुराणों को मुख से बोलते और गणेश जी लिखते गये थे। मस्तिष्क व्यास जी का काम करता रहा और हाथ गणेश जी का। इस लेखन को प्रकाशित करने के झंझट में कोई और तैयार न हुआ, तो अपनी निज की व्यवस्था करनी पड़ी। ३००) मूल्य के पुराने जमाने के हैण्ड प्रेस से काम चालू किया और आज उसका विस्तार दर्जनों मशीनों, ऑटोमैटिक ऑफसेटों के रूप में काम करता दिख रहा है। अखण्ड ज्योति और चार अन्य पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या तीन लाख को पार कर गयी है। सस्ते ट्रैक्ट करोड़ों की संख्या में अनेकानेक भाषाओं में प्रकाशित हुए और देश-विदेश में जन-जन तक पहुँचे हैं।

गुरुदेव का परामर्श था उच्चस्तरीय सिद्धियों के अर्जित करने का एक ही तरीका "बोना और काटना"। बाजरा, मक्का आदि का एक दाना बोये जाने पर हजार दाना उत्पन्न करता है। भगवान का व्यवहार भी ऐसा है, कि वह लिये बिना किसी को कुछ देता कहीं। सुदामा से तंदुल, गोपियों से दही, शबरी से बेर, बलि से भूमि, कर्ण से दाँतों में चिपका सोना प्रभु ने मांगा था। हमसे भी जो कुछ आशा अपेक्षा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की गयी हमने दिया । उत्तराधिकार का दावा प्रस्तुत करने वाले कुटुम्बियों को इसमें से एक कानी कौड़ी भी न मिली । इसके उपरान्त रह जाता है श्रम-सद्भाव । रात्रि के समय उपासना, दिनभर जनता-जनार्दन के सेवा कार्य । भावनाओं की दृष्टि से अपने पास जो तप और पुण्य था, उसका एक-एक कण पिछड़ों को उठाने, आगे बढ़ाने में लगा दिया । अब और कोई सूझ नहीं पड़ता, कि अपने पास और कुछ बचा हो । हो सकता है, कि जमा पूँजी कम और दान-अनुदान का पलड़ा बोझिल होने के कारण रामकृष्ण परमहंस की तरह गले के कैंसर का शिकार होना पड़े ।

इस अनुदान का प्रतिदान हमें हाथों-हाथ मिलता रहा । ७५ वर्ष की आयु में स्वस्थता और कार्य क्षमता उतनी ही बनी हुई है, जितनी किसी नवयुवक की होनी चाहिए । हमने प्यार बाँटा और प्यार बटोरा है । उसी का प्रतिफल है, कि प्रायः बीस लाख व्यक्ति अपना बहुमूल्य समय अपने संकेतों पर अहर्निशि नवनिर्माण के लिए नियोजित किये हुए हैं । धन संबंधी बोया हुआ बीज कितना फला, इसके संदर्भ में अनुमान मथुरा के गायत्री तपोभूमि और युग निर्माण योजना आश्रम की भव्यता देख कर लगाया जा सकता है । हरिद्वार के शान्ति कुञ्ज और ब्रह्मवर्चस् की इमारतें ही नहीं, कार्यपद्धतियाँ भी ऐसी ही हैं, जिसे देख कर ऋषि प्रयासों की पुनरावृत्ति अनुभव की जा सकती है । ब्रह्मवर्चस् में जो अनुसंधान, विज्ञान और अध्यात्म की दृष्टि से किया जा रहा है, उसे देख कर इन दोनों ही क्षेत्रों के मूर्धन्य व्यक्ति आश्चर्य चकित रह गये हैं ।

नवयुग का संदेश व्यापक करने के लिए देश-देशान्तरों में २४०० गायत्री शक्ति पीठों के नाम से भव्य भवन बने हुए हैं और अपने-अपने क्षेत्र में नवसृजन का वातावरण बना रहे हैं । इसी प्रकार प्रज्ञा संस्थान स्वाध्याय मण्डलों की संख्या अब बढ़ते-बढ़ते २४ हजार तक जा पहुँची है । यह हमारी प्रत्यक्ष कार्यकर्ती भुजाएँ हैं । इन्हें देखकर सहस्र भुजा वाला पुरातनकाल का महाबली भी अपने को पिछड़ा हुआ अनुभव कर सकता है । यह जन सेवा कार्यों का बहुचर्चित परिचय है, जिसे कोई भी चर्म चक्षुओं से देख सकता है । एक मुट्ठी अनाज हर घर से माँगने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और एक घंटा श्रम से इतना क्रांतिकारी वातावरण बना देना, संसार में अपना एक विशिष्ट कीर्तिमान है। इस प्रकार सोचते तो कितने ही व्यक्ति रहे हैं, पर इन शक्ति स्रोतों को व्यवहारतः उभारने और कार्यान्वित करने का यह प्रथम प्रयोग है, जिसे अपने ढंग की अभूतपूर्व सफलता का श्रेय दिया जा सकता है।

यह प्रत्यक्ष घटनाएँ हमारे जीवन की हैं। जो परोक्ष है, वह इससे कम नहीं, इससे बड़ा है, भले ही लोग उसे एक स्थान पर दृश्यमान न देख पाते हों। दुर्गुणों को छोड़ने और सद्गुणों को अपनाने की प्रक्रिया ऐसी ही है, जिसकी लपेट में एक करोड़ लोग भी आ चुके हों, तो कोई आश्चर्य नहीं। यह गायत्री यज्ञों के अवसर पर उपस्थित हुए लोगों के द्वारा देव-दक्षिणा प्रस्तुत करने के अनुबंध द्वारा सम्पन्न हुआ है। नैतिक क्रान्ति, बौद्धिक क्रान्ति और सामाजिक क्रान्ति की जितनी बड़ी पृष्ठ-भूमि बनी है, उसका लेखा-जोखा लेने वाले दाँतो तले उँगली दबाये बिना नहीं रह सकते। सर्वतोमुखी परिवर्तन का यह तूफानी अभियान- प्रज्ञा अभियान अभी रुका नहीं है, वरन् दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ता ही जा रहा है। अदृश्य वातावरण के परिशोधन के लिए हर दिन २४ करोड़ गायत्री जप का सामूहिक अनुष्ठान अपना अदृश्य प्रभाव किस कदर उत्पन्न करता रहा, इसका और अनुमान अगली पीढ़ी भली प्रकार लगा सकेगी।

मथुरा और हरिद्वार के आश्रमों द्वारा साहित्य प्रकाशन, अन्यान्य भाषाओं में उसका अनुवाद, प्रचारक कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण, अध्यात्मवादी विज्ञान का नव-जीवन, वातावरण को उलट कर सीधा करने जैसे प्रयास में सैकड़ों की संख्या में उच्चशिक्षित ऐसे व्यक्ति संलग्न हैं, जो हजारों रुपये मास की आजीविका को लात मारकर मात्र अन्न-वस्त्र पर निर्वाह कर रहे हैं। यह कीर्तिमान भी ऐसा ही है, जो इन दिनों कदाचित किसी संस्था में दृष्टिगोचर हो सके। इनके त्याग और पराक्रम ने मिशन को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया और गोवर्धन उठाने समुद्र सेतु बांधने की गाथाओं को प्रत्यक्ष कर दिखा दिया। यह निकट आकर देखने, समझने और अन्वेषण करने पर ही विदित हो सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

युग साहित्य में अब तक प्रज्ञा पुराण के पाँच खण्डों का निर्माण और अगले दिनों भी उस प्रयास का गतिशील रहना ऐसा कार्य है, जिसे इस युग के किन्ही विद्वानों ने एकाकी या सामूहिक रूप से कर गुजरने की कल्पना या चेष्टा नहीं की ।

इन पंक्तियों को पढ़ कर कोई इस भ्रम में न पड़े, कि यह किसी व्यक्ति विशेष का पुरुषार्थ है। ऐसा कहना हमारे अहंकार को बढ़ाना और जिसकी अपार अनुकम्पा से यह बन पड़ा उसके प्रति कृतघ्नता प्रकट करना होगा। हमें सिर्फ कठपुतली की तरह नृत्य कर प्रशंसा पात्र बनने का सुयोग अनायास ही मिला है । यह सारा खेल उसी हिमालयवासी देवात्मा का हैं, जिसे हम अपना इष्टदेव मानते हैं और जिसकी ऊंगलियों में हमने हर अवयव के तार जोड़ दिये हैं। यह कठ-पुतली उसी आधार पर अनोखे नाच दिखाती रही है और जीवन की जो थोड़ी अवधि शेष है उसमें इससे भी बढ़कर कौतूहल कृत्य दिखाती रहेगी ।

हमारी बैटरी जब-जब शिथिल पड़ती रही है तब-तब हिमालय की कन्दराओं में बुलाया जाता रहा है और चार्ज करके इस प्रकार वापिस भेजा जाता रहा है, कि वह अपने में नव-जीवन का संचार [illegible]नुभव कर सके। प्रत्येक सक्ष्म[illegible] को इन कृत्यों का कर्ता उसी [illegible] [illegible] चाहिए, जिसे हम अपने "[illegible]पितु, मातु सहायक, स्वामि, सखा" [illegible] विश्वास करते हैं कि उसी के अनुग्रह से हमारा ईश्वर तक पहुँचना सम्भ[illegible] । माता के अनुग्रह से ही तो बच्चा निर्वाह पाता और विकसित होत[illegible]

—०—

क्रमाङ्क– २५५ । युगान्तर चे[illegible]त, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार । मूल्य ४० पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org